Toppersnotes®
Unleash the topper in you

BPSC

TRE 4.0

बिहार लोक सेवा आयोग (BPSC)

भाग - 2

(भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, राजव्यवस्था, भूगोल, विज्ञान एवं EVS)

सामान्य अध्ययन - I

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	1857 का विद्रोह	1
2	जन आंदोलन गांधीवादी युग (1917–1925)	7
3	स्वराज के लिए संघर्ष (1925–1939)	14
4	स्वतंत्रता की ओर (1940–1947)	28
5	भारतीय संविधान की मूल विशेषताएँ	39
6	संविधान की मुख्य्य विशेषताएँ	45
7	नागरिकता	48
8	मौलिक अधिकार	56
9	राज्य के नीति के निदेशक तत्व	74
10	मौलिक कर्त्तव्य	80
11	संवैधानिक संशोधन	82
12	मानव भूगोल	84
13	ज्वालामुखी और भूकंप	96
14	भारत की जलवायु	102
15	भारत में मृदा	125
16	कृषि	130
17	दैनिक जीवन में विज्ञान	152
18	पारिस्थितिकी तंत्र	169
19	ओज़ोन रिक्तीकरण	194

1
CHAPTER

1857 का विद्रोह

- **1857 के विद्रोह** के पहले भारत में कई स्थानों में छूट पुट विद्रोह होते रहे जिनको बढ़ने से पहले दबा दिया गया जा
- 1764 में **हेक्टर मुनरो** के नेतृत्व में लड़ रही सेना के कुछ सिपाही विद्रोह करके **मीर कासिम** से जा मिले
- 1806 में **वेल्लोर मठ** में कुछ भारतीय सैनिको ने अपने **सामाजिक**, **धार्मिक** रीति रिवाजो में हस्तक्षेप के कारण विद्रोह कर दिया ओर **मैसूर के राजा** का झंडा फहरा दिया
- 1842में **बर्मा युद्ध** के लिए भेजी जाने वाली सेना में **47वी पैदल सैन्य टुकड़ी** के कुछ सिपाहीयों ने **उचित भत्ता** न मिलने के कारण विद्रोह कर दिया
- 1844में **34वी एन आई** तथा **64वी रेजिमेंट** के सैनिको ने उचित भत्ते के आभाव में **सिंध** के **सैन्य अभियान** पर जाने से इंकार कर दिया
- 1849-50 में **पंजाब** स्थित **गोविंदगढ़** कि एक **रेजिमेंट** ने विद्रोह कर दिया
- भारत में अंग्रेज नीति के विरुद्ध पनप रहे **असंतोष** का **शासक वर्ग** को भी आभास हो चुका था

1857 के विद्रोह का महत्व

- इसने भारत में **ब्रिटिश साम्राज्य की नींव** हिला दी और एक समय तो ऐसा लग रहा था कि ब्रिटिश शासन आने वाले समय में समाप्त हो जाएगा।
- एक **सिपाही विद्रोह** के रूप में जो शुरू हुआ वह जल्द ही उत्तरी **भारत** के **व्यापक क्षेत्रों** में किसानों और अन्य नागरिक आबादी में फ़ैल गया।
- यह उभार इतना व्यापक था कि कुछ समकालीन पर्यवेक्षकों ने इसे - **राष्ट्रीय आंदोलन की पहली लड़ाई** कहा।

1857 के विद्रोह के कारण

राजनीतिक प्रशासनिक कारण

- **रियासतों का असंतोष** -अंग्रेजो का प्रभुत्व रियासतों के ऊपर इस प्रकार बढ़ता गया कि अनेक राजवंश पूरी तरह से नष्ट हो गए
- **कर्मचारियों का असंतोष** -अंग्रेजो ने रियासतों पर कब्ज़ा करके अनेक कर्मचारियों की आजीविका बंद कर दी
- **मुग़ल सम्राट का अपमान** -**बहादुर शाह दिल्ली** का शासक था, जनता उनका सम्मान करती थी लेकिन अंग्रेजो ने उनका अपमान किया तो जनता की घृणा उनके प्रति बढ़ती गयी
- **अवध के नबाब का अपमान** -अंग्रेजो ने **नबाब वाजिद अली** शाह को निर्वासित करके उसके महल को लूट लिया और **बेगमो** का अपमान किया
- **जागीरो को छीनना** - अंग्रेजो ने नबाब के अधीन बड़े बड़े **जागीरदारों** की जागीर छीन ली और किसानो को बहुत परेशान किया
- **उत्तराधिकार निषेध अधिनियम** - **डलहौजी** की **हड़प नीति** से अनेक शासक असंतुष्ट हुए और अंततः जब अवध को **कुशासन** के आरोप में अंग्रेजी राज्य में मिलाया गया। तो असंतोष तीव्र हुआ।
- झाँसी की **रानी लक्ष्मी बाई** एवं **पेशवा** का दत्तक पुत्र **नाना साहब अंग्रेजो** के व्यवहार से विरोधी बन गए
- **अंग्रेजो की कूटनीति** -अंग्रेजो की कूटनीति यह थी कि भारत में एक भी **राजवंश** नहीं रहने दिया जाएगा इस नीति से अनेक लोग अंग्रेज विरोधी बन गए
- ब्रिटिश शासन की **विदेशी प्रकृति** ने भारतीयों को असंतुष्ट कर दिया। वस्तुतः अंग्रेज भारत में सदैव विदेशी रहे और जातीय श्रेष्ठता के नशे में चूर रहे, जो भारतीयों असंतोष का कारण बना।

आर्थिक कारण

- ब्रिटिश आर्थिक नीति ने भारतीयों अर्थव्यवस्था के **परंपरागत ढांचे का विनाश** कर दिया। अतः **कृषि उद्योग** एवं **गांवों** पर उसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ा।
- अधिकतम लगान राशि के कारण **किसानों का निर्धनीकरण** हुआ।
- **हस्तशिल्प उद्योगों** का पतन हुआ। **नगदी फसलों** की बाध्यकारी कृषि से खाद्यान्न की कमी हुई। **अकाल** की बर्बरता बढी। अतः जन असंतोष बढा।

सामाजिक-सांस्कृतिक कारण

भारतीयों संस्कृति को निम्न बताकर **ईसाईं करण** पर बल ।

- कानूनों के माध्यम से भारतीयों के सामाजिक धार्मिक मामलों में हस्तक्षेप - जैसे **सती प्रथा निरोधक कानून**, **धार्मिक अयोग्यता** अधिनियम, **विधवा पुनर्विवाह अधिनियम** बनाया।
- 1850 में एक अधिनियम ने विरासत के **हिंदू कानून** को बदल दिया, जिससे एक हिंदू जो **ईसाई धर्म** में परिवर्तित हो गया, को अपनी **पैतृक संपत्तियों** का **उत्तराधिकारी** बना दिया।
- **ईसाई मिशनरियों** की बढ़ती गतिविधियों को संदेह और **अविश्वास** की दृष्टि से देखा गया।

Unleash the topper in you

सैन्य कारण

अंग्रेज सिपाहियों की तुलना में **कम वेतन** तथा **पदोन्नति** में **भेदभाव**

- भारतीय सिपाही कभी **सूबेदार** के **पद** से ऊपर **नहीं** उठ सकता था।
- सिपाहियों को जातीय **धार्मिक पहचान** संबंधित **चिन्हों** को धारण करने से रोका गया।
- तत्काल कारण: **गाय** और **सुअर** की **चर्बी** वाले कारतूस का उपयोग।
- सिपाहियों को अतिरिक्त भत्ते के भुगतान के बिना अपने घरों से दूर **विदेशो** में सेवा देने जाना पड़ता था
- सैन्य असंतोष का एक महत्वपूर्ण कारण **सामान्य सेवा भर्ती अधिनियम**, **1856** था, जिसने सिपाहियों के लिए जब भी आवश्यक हो, **समुद्र पार** करना अनिवार्य कर दिया था।
- हिंदू मानते थे कि **समुद्र पार** करने से वे अपनी **जाति खो** देंगे।

बाहरी घटनाओं का प्रभाव

बाहरी घटनाओं जैसे - **अफगान युद्ध** (1838-42), **पंजाब युद्ध** (1845-49), और **क्रीमियन युद्ध** (1854-56) आदि से स्पष्ट हो गया की अंग्रेज **अजेय नही** है।

तात्कालिक कारण

विद्रोह का **तात्कालिक** कारण **चर्बी** वाले **कारतूस** के प्रयोग का मुद्दा था।

- वस्तुतः **दमदम** सैन्य छावनी से पहली बार इस कारतूस के प्रयोग की सूचना भारतीयों को मिली।
- इससे भारतीयों सैनिकों को यह लगा कि ब्रिटिश जानबूझकर उनके **धर्म** को **भ्रष्टकर** रहे हैं।

प्रसार

सिपाही विद्रोह

- 29 मार्च, 1857: **बैरकपुर** में तैनात एक युवा **सैनिक मंगल पांडे** ने अकेले ही विद्रोह कर अपने ब्रिटिश अधिकारियों पर हमला कर दिया।
- उन्हें **फांसी पर लटका दिया** गया था और इस घटना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया था। लेकिन इसने भारतीय सिपाहियों के बीच आक्रोश प्रकट हुआ।
- 24 अप्रैल: **मेरठ** में **तैनात थर्ड नेटिव कैवलरी** के 90 जवानों ने चर्बी वाले कारतूसों का इस्तेमाल करने से मना कर दिया।
- 9 मई: उनमें से 85 को बर्खास्त कर दिया गया और दस साल के कारावास की सजा सुनाई गई।
- 10 मई: पूरे **भारतीय गैरीसन** ने विद्रोह कर दिया और **दिल्ली की ओर मार्च** करने का फैसला किया।
- दिल्ली पहुँचे और **बहादुर शाह** को **भारत का सम्राट** घोषित किया।
- **बहादुर शाह** ने भारत के सभी प्रमुखों और **शासकों** को **पत्र लिखकर** ब्रिटिश शासन से लड़ने के लिए भारतीय राज्यों का एक **संघ** बनाने का आग्रह किया।
- पूरी बंगाल सेना ने जल्द ही विद्रोह कर दिया जो तेजी से फैल गया।
- पूरा उत्तर और उत्तर पश्चिम भारत अंग्रेजों के खिलाफ शस्त्र उठाए था।
- **मध्य भारत** में भी, जहां शासक अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे, सेना ने विद्रोह कर दिया और विद्रोहियों में शामिल हो गई।

नागरिक विद्रोह

- सैनिक विद्रोह के तुरंत बाद **शहर** और **ग्रामीण** इलाकों में विद्रोह हुआ।
- जहां कहीं भी विद्रोह हुआ, **सरकारी खजाने** को **लूट** लिया गया, पत्रिका को बर्खास्त कर दिया गया, **बैरक** और **कोर्ट हाउस जला** दिए गए और जेल के दरवाजे खोल दिए गए।
- इस विद्रोह में किसानों, कारीगरों, दुकानदारों, दिहाड़ी मजदूरों, जमींदारों, धार्मिक भिक्षुओं, पुजारियों आदि की व्यापक भागीदारी देखी गई।
- किसानों और **छोटे-छोटे जमींदारों** ने उन **साहूकारों** और जमींदारों पर हमला करके अपनी शिकायतों को खुलकर व्यक्त किया, जिन्होंने उन्हें जमीन से बेदखल कर दिया था।
- लोगों ने विद्रोह का फायदा उठाकर साहूकारों के **बही-खाते** और **कर्ज के रिकॉर्ड** को नष्ट कर दिया।
- **टेलीग्राफ** के **तार** काट दिए गए और दिल्ली को चेतावनी संदेश देने वाले घुड़सवारों को रोका गया।
- विद्रोह के बारे में सबसे उल्लेखनीय बात इसकी ठोस **हिंदू-मुस्लिम एकता** थी।
- सारे सिपाही चाहे हिन्दू हो या मुसलमान। **बादशाह बहादुर शाह जफर** के आधिपत्य को स्वीकार किया और **"चलो दिल्ली"** का आह्वान किया।
- हिंदुओं की भावनाओं के सम्मान में **गोहत्या पर प्रतिबंध** लगा दिया गया था।

विद्रोह के मुख्य केंद्र

- यह विद्रोह **पटना** के पड़ोस से लेकर **राजस्थान** की सीमा तक पूरे क्षेत्र में फैल गया।
- विद्रोह का केंद्र **दिल्ली, कानपुर**, **लखनऊ**, **बरेली**, **झांसी** और **आरा** थे।
- इन सभी स्थानों ने अपने-अपने नेताओं को खदेड़ दिया और **सम्राट बहादुर शाह** की आधिपत्य को स्वीकार कर लिया।

1857 के विद्रोह के दौरान क्षेत्रीय नेता

नेता का नाम	विद्रोह का स्थान	1857 के विद्रोह में भूमिका
बख्त खान	बरेली	• बरेली में सैनिकों के विद्रोह का नेतृत्व किया, 3 जुलाई, 1857 को **दिल्ली** पहुंचे। • उन्होंने **हिंदू** और **मुस्लिम** दोनों विद्रोहियों से बना सैनिकों का एक दरबार बनाया। • उन्होंने '**ग्रेटर एडमिनिस्ट्रेटिव काउंसिल**' की स्थापना करके लोकतांत्रिक सुधारों की शुरुआत की
नाना साहब और तांत्या टोपे	कानपुर	• उन्होंने अंग्रेजों को **कानपुर** से खदेड़ दिया और **पेशवा बाजीराव द्वितीय** के **दत्तक पुत्र नाना साहब** को पेशवा घोषित किया • तात्या टोपे महान योद्धा थे जिन्होंने **रानी लक्ष्मीबाई** को **ग्वालियर** पर कब्जा करने में मदद की थी। • एक मित्र ने तात्या टोपे को धोखा दिया और उन्हें कैद कर लिया गया और बाद में **शिवपुरी** में **फांसी** पर लटका दिया गया। • माना जाता है कि **नाना साहब** 1859 तक **नेपाल** भाग गए थे। यह ज्ञात नहीं है कि उनकी मृत्यु कैसे, कब और कहाँ हुई।
बेगम हजरत महल	लखनऊ	• अवध की बेगम ने अपने बेटे **बिरजिस कादर** को **अवध** का नवाब घोषित किया। • विद्रोह के दौरान उन्होंने **नाना साहब**, **तांतिया टोपे** आदि के साथ अंग्रेजों के खिलाफ काम किया। • जब तक संघर्ष कर सकती थी किया और अंत में **नेपाल** में शरण पाई, जहां 1879 में उसकी मृत्यु हो गई।
रानी लक्ष्मी बाई	झाँसी	• वह **व्यपगत** के **सिद्धांत** के खिलाफ थी और अपने **दत्तक पुत्र** के लिए झांसी के सिंहासन के लिए लड़ी। • मार्च 1858: ब्रिटिश सेना ने झांसी पर हमला किया, लक्ष्मीबाई अपने बेटे के साथ किले से भाग निकलीं। • वह **कालपी** भाग गई, जहां वह तात्या टोपे से जुड़ गई। • 17 जून, 1858: **ग्वालियर** से पांच मील दक्षिण-पूर्व **कोटा-की-सराय** में लड़ाई के दौरान, पुरुष पोशाक पहने रानी को गोली मार दी गई और वह अपने घोड़े से गिर गई और उसकी मृत्यु हो गई।
कुंवर सिंह	आरा, बिहार	• उनके नेतृत्व में सैन्य और नागरिक विद्रोह पूरी तरह से एक हो गए • मार्च 1858: कुंवर सिंह ने **आजमगढ़** पर कब्जा किया। **ब्रिगेडियर डगलस** द्वारा पीछा करने पर वह अपने घर आरा की ओर पीछे हट गया। • 23 अप्रैल 1858: उन्होंने बहादुरी से लड़ाई लड़ी और ब्रिटिश सेना को **खदेड़** दिया। • लेकिन एक लड़ाई में लगी चोटों के कारण जल्द ही 26 अप्रैल 1858 को उनकी मृत्यु हो गई।
शाह मल	बागपत, उत्तर प्रदेश	• **किसानों** को **संगठित** किया, रात में गांव से गांव तक मार्च किया, लोगों से ब्रिटिश आधिपत्य के खिलाफ विद्रोह करने का आग्रह किया। • उनके नेतृत्व में लोगों ने सरकारी भवनों पर हमला किया, नदियों पर बने पुलों को नष्ट कर दिया और पक्की सड़कों को खोदा। • उन्होंने विवादों को सुलझाने और निर्णय देने के लिए "**न्याय का हॉल**" स्थापित किया। • जुलाई 1857: **शाह मल** की एक अंग्रेज **अधिकारी डनलप** ने हत्या कर दी।

अज्ञात शहीद

स्थान	नेता
बैरकपुर	मंगल पांडे
दिल्ली	बहादुर शाह द्वितीय, जनरल बख्त खान, हकीम एहसानुल्लाह (बहादुर शाह द्वितीय के मुख्य सलाहकार)
लखनऊ	बेगम हजरत महल, बिरजिस कादिर, मौलवी अहमदुल्लाह

Topper in you watermark

कानपुर	नाना साहब, राव साहब (नाना के भतीजे), तांतिया टोपे, अजीमुल्ला खान (नाना साहब के सलाहकार)
झांसी	रानी लक्ष्मीबाई
बिहार (जगदीशपुर)	कुंवर सिंह, अमर सिंह
इलाहाबाद और बनारसी	मौलवी लियाकत अली
फैजाबाद	मौलवी अहमदुल्ला (उन्होंने विद्रोह को अंग्रेजी के खिलाफ जिहाद घोषित किया)
फर्रुखाबाद	तुफजल हसन खान
बिजनौर	मोहम्मद खान
मुरादाबाद	अब्दुल अली खान
बरेली	खान बहादुर खान
ग्वालियर/कानपुर	तांतिया टोपे
असम	कांडापरेश्वर सिंह, मनीराम दत्ता
ओडिशा	सुरेंद्र शाही, उज्जवल शाही
कुल्लू	राजा प्रताप सिंह
राजस्थान	जयदयाल सिंह और हरदयाल सिंह
गोरखपुर	गजधर सिंह
मथुरा	सेवी सिंह, कदम सिंह

विद्रोह का दमन

- विद्रोहियों को एक प्रारंभिक झटका तब लगा जब अंग्रेजों ने लंबी लड़ाई के बाद 20 सितंबर 1857 को **दिल्ली पर कब्जा** कर लिया।
- वृद्ध सम्राट **बहादुर शाह** को **बंदी** बना लिया गया और रंगून निर्वासित कर दिया गया जहाँ 1862 में उनकी मृत्यु हो गई।
- **शाही राजकुमारों** को पकड़ लिया गया और मौके पर ही उन्हें **मार डाला** गया।
- 1859 के अंत तक, भारत पर ब्रिटिश अधिकार पूरी तरह से फिर से स्थापित हो गया था।
- **सकारात्मक परिणाम**: विद्रोह विफल तो हुआ लेकिन व्यर्थ नहीं गया। यह ब्रिटिश साम्राज्यवाद से आजादी के लिए भारतीय लोगों का **पहला महान संघर्ष** था। इसने **आधुनिक राष्ट्रीय आंदोलन** के उदय का मार्ग प्रशस्त किया।

विद्रोह से जुड़े ब्रिटिश सेना के अधिकारी

जनरल जॉन निकोलसन	20 सितंबर 1857 को दिल्ली पर कब्जा कर लिया (निकोलसन की जल्द ही लड़ाई के दौरान प्राप्त एक नश्वर घाव के कारण मृत्यु हो गई)।
मेजर हडसन	दिल्ली में बहादुर शाह के पुत्रों और पौत्रों को मार डाला।
सर ह्यूग व्हीलर	26 जून 1857 तक नाना साहब की सेना के विरुद्ध रक्षा। ब्रिटिश सेना ने 27 तारीख को इलाहाबाद को सुरक्षित आचरण के वादे पर आत्मसमर्पण कर दिया।
जनरल नील	जून 1857 में बनारस और इलाहाबाद पर पुनः कब्जा कर लिया। कानपुर में, उसने नाना साहिब की सेना द्वारा अंग्रेजों की हत्या का बदला लेने के लिए भारतीयों को मार डाला। विद्रोहियों से लड़ते हुए लखनऊ में शहीद हुए।
सर कॉलिन कैम्पबेल	6 दिसंबर, 1857 को कानपुर की अंतिम वसूली। 21 मार्च, 1858 को लखनऊ का अंतिम पुन: कब्जा। 5 मई, 1858 को बरेली पर पुनः कब्जा।
हेनरी लॉरेंस	अवध के मुख्य आयुक्त जिनकी मृत्यु 2 जुलाई, 1857 को लखनऊ में विद्रोहियों द्वारा ब्रिटिश निवास पर कब्जा करने के दौरान हुई थी।
मेजर जनरल हैवलॉक	17 जुलाई, 1857 को विद्रोहियों (नाना साहब की सेना) को हराया। दिसंबर 1857 में लखनऊ में मृत्यु हो गई।
विलियम टेलर और आय	अगस्त 1857 में आरा में विद्रोह को दबा दिया.
ह्यूग रोज	झांसी में विद्रोह को दबा दिया और 20 जून, 1858 को ग्वालियर पर पुनः कब्जा कर लिया। पूरे मध्य भारत और बुंदेलखंड को उसके द्वारा ब्रिटिश नियंत्रण में लाया गया था।
कर्नल ओन्सेल	बनारस पर कब्जा

असफलता के कारण

- **विद्रोह समय से पूर्व प्रारम्भ** -क्रांति के लिए 31 मई 1857 का दिन निश्चित किया गया लेकिन **बैरकपुर** और **मेरठ** की घटनाओ के कारण क्रांति समय से पहले प्रारम्भ हो गयी
- क्रांति में भाग वाले नेता किसी एक उदेश्य के लेकर नहीं लड़ रहे थे कोई **धर्म** की **रक्षा** के लियर तो कोई अपने **राज्य** की **रक्षा** के लिए तो कोई देश की आज़ादी के लिए

- **योग्य नेतृत्व का आभाव** - क्रांति में सर्वमान्य **राष्ट्रीय नेता** का **आभाव** था विद्रोहियों का कोई **केंद्रीय संगठन** नहीं था और ना ही कोई ऐसा अखिल भारतीयों नेतृत्व उभर कर सामने आया, जो विभिन्न क्षेत्र के लोगों को एकजुट कर सके।
- **सहयोग व् संगठन का आभाव** -क्रांति में अधिकांश **जमींदार** तथा **राजा महाराजों** ने अंग्रेजो का साथ दिया **मध्यवर्ग** इस विद्रोह से अलग रहा।
- **साधन की कमी** - क्रांतिकारियों के पास तलवार तथा **पुराने किस्म** के **हथियार** थे जबकि अंग्रेजो के पास **आधुनिक हथियार** व् तोपखाना था
- **सीमित क्षेत्र** -क्रांति सम्पूर्ण भारत में न होकर कुछ ही **प्रदेश** तक **सीमित** रही
- **यातायात के साधनो पर अंग्रेजो का नियंत्रण** -**रेल** ,**डाक** ,**तार** और **यातायात** के साधनो पर अंग्रेजो का नियंत्रण था जिसके कारण वे युद्ध सामग्री सरलता से एक स्थान से दुसरे स्थान तक भेज सकते थे। साथ ही उस समय क्रीमिया युद्ध से खाली हुई ब्रिटिश सेना भी ब्रिटिश की सहायता के लिए पहुँची। अतः वह विद्रोह को दबाने में सफल हुए।

परिणाम

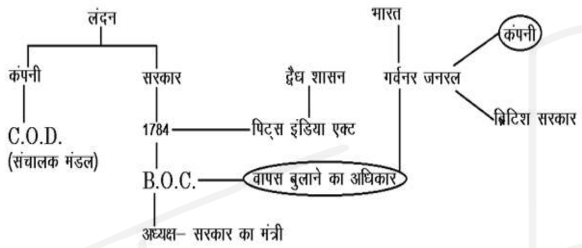

विद्रोह का प्रभाव

- पुन: स्थापित ब्रिटिश शासन की संरचना और नीतियों में, कई मायनों में, अत्यधिक परिवर्तन हुए।
- ब्रिटिश क्राउन ने 1858 के एक अधिनियम के माध्यम से कंपनी पर अधिकार कर लिया।
- **सैन्य संगठन में परिवर्तन**-
    - यूरोपीय सैनिकों की संख्या बढ़ाकर **एक यूरोपीय** से **दो भारतीय** सैनिकों को बंगाल सेना में और **दो** से **पांच** बंबई और मद्रास सेनाओं में निर्धारित किया गया था।
    - **तोपखाने** जैसी सेना की महत्वपूर्ण शाखाओं को विशेष रूप से **यूरोपीय** हाथों में डाल दिया गया था।
    - सैनिकों के बीच किसी भी **राष्ट्रवादी दल** के विकास को रोकने के लिए **जाति**, **समुदाय**, **धर्म** और क्षेत्र के आधार पर **रेजिमेंट** बनाई गईं।
- **फूट डालो और शासन करो** -
    - नागरिक आबादी में "**फूट डालो और राज करो**" की नीति भी पेश की गई थी।
    - **मुसलमानों** को कठोर दंड दिया गया और सार्वजनिक नियुक्तियों और अन्य क्षेत्रों में उनके साथ **भेदभाव** किया गया।
    - बाद में इस नीति को उलट दिया गया और **मुसलमानों** का **तुष्टिकरण** देर से शुरू हुआ।
    - फूट डालो और राज करो की नीति ने भारत में **सांप्रदायिकता** के विकास में योगदान दिया।
- **राजकुमार के प्रति नई नीति** -
    - **विलय की नीति** को अब छोड़ दिया गया था और शासकों को उत्तराधिकारी अपनाने के लिए अधिकृत किया गया था।
    - यह उन देशी शासकों के लिए एक **पुरस्कार** के रूप में किया गया था जो विद्रोह के दौरान अंग्रेजों के प्रति **वफादार** रहे थे।
    - भारतीय शासकों के अधिकार को पूरी तरह से अंग्रेजों के अधिकार के अधीन कर दिया गया था।
- **नए दोस्तों की तलाश करें** -
    - देश में अपने भाग्य को मजबूत करने के लिए अंग्रेजों ने **जमींदारों**, **राजकुमारों** और **जमींदारों** के साथ अपने संबंधों को सुगम बनाया।
- **व्हाइट म्युटिनी** -
    - 1861 से पहले, भारत में दो अलग-अलग सैन्य बल थे, जो ब्रिटिश शासन के अधीन काम कर रहे थे।
    - एक **रानी की सेना** थी और दूसरी में **EIC की इकाइयाँ** शामिल थीं।
    - कंपनी के सैनिकों को गृह क्षेत्रों के अलावा अन्य क्षेत्रों में संचालन से संबंधित वेतन के **अतिरिक्त भत्ते** मिलते थे।
    - सत्ता के हस्तांतरण के साथ, **भत्ता** को **रोक** दिया गया था।
    - श्वेत विद्रोह को भारत में पहले से ही अनिश्चित ब्रिटिश स्थिति के लिए एक **संभावित खतरे** के रूप में देखा गया था

विद्रोह की प्रकृति

- 1857 के विद्रोह की प्रकृति पर विचार भिन्न हैं। कुछ ब्रिटिश इतिहासकारों के लिए यह एक मात्र '**सिपाही विद्रोह**' था।
- **डॉ के. दत्ता** 1857 के विद्रोह को विद्रोहियों के विभिन्न वर्गों के बीच एकजुटता और उद्देश्य की एकता के अभाव के रूप में चिह्नित आंदोलन के रूप में मानते हैं।
- **वी.डी. सावरकर** ने अपनी पुस्तक, **द इंडियन वॉर ऑफ इंडिपेंडेंस**, 1857 में इसे "**राष्ट्रीय स्वतंत्रता के नियोजित युद्ध**" के रूप में व्याख्यायित किया और इसे स्वतंत्रता का पहला युद्ध कहा।

- **डॉ. एस.एन. सेन** ने अपने **एटिन फिफ्टी-सेवेन** में विद्रोह को धर्म के लिए लड़ाई के रूप में शुरू किया लेकिन स्वतंत्रता के युद्ध के रूप में समाप्त होने के रूप में माना।
- **डॉ आर.सी. मजूमदार** इसे न तो पहला मानते हैं, न राष्ट्रीय और न ही स्वतंत्रता संग्राम।
- **जवाहरलाल नेहरू** ने 1857 के विद्रोह को अनिवार्य रूप से एक सामंती विद्रोह माना, हालांकि इसमें कुछ राष्ट्रवादी तत्व थे (डिस्कवरी ऑफ इंडिया)।
- **एम.एन. रॉय** ने महसूस किया कि विद्रोह वाणिज्यिक पूंजीवाद के खिलाफ सामंतवाद की आखिरी खाई था।
- **आर.पी. दत्त** ने विदेशी प्रभुत्व के खिलाफ किसान विद्रोह के महत्व को भी देखा, जबकि उन्होंने इसे पुरानी सामंती व्यवस्था की रक्षा के रूप में स्वीकार किया।
- **एल.ई.आर. रीस** ने इसे सभ्यता और बर्बरता के बीच एक संघर्ष के रूप में देखा,जिसे स्वतंत्रता के लिए युद्ध के रूप में स्वीकार नही किया जा सकता।
- **एस.बी**. चौधरी कहते हैं, विद्रोह एक विदेशी शक्ति को चुनौती देने के लिए कई वर्गों के लोगों का पहला संयुक्त प्रयास था।

Toppersnotes
Unleash the topper in you

2 CHAPTER

जन आंदोलन: गांधीवादी युग (1917-1925)

- गांधीजी का युग जन-आधारित संघर्ष से चिह्नित है।
- पहले, राष्ट्रवादी गतिविधियाँ कुछ बुद्धिजीवियों और समूहों तक ही सीमित थीं, हालाँकि, गांधीजी के साथ, राष्ट्रीय आंदोलन ने एक मोड़ लिया और इसने भारत में स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक नए युग की शुरुआत की।
- उनके नेतृत्व में, भारतीय एक साथ आए और अपने साझा दुश्मन के खिलाफ एकजुट हुए।

गांधी का प्रारंभिक जीवन

- मोहनदास करमचंद गांधी: 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में जन्म।
- शिक्षा: लंदन में कानून की पढाई की और 1894 में एक कानूनी फर्म में काम करने के लिए दक्षिण अफ्रीका के नेटाल गए।
- दक्षिण अफ्रीका: उनकी विचारधाराओं का विकास और परिवर्तन तब हुआ जब उन्हें अन्य साथियों भारतीयों और अफ्रीकियों की तरह यूरोपीय या गोरों के हाथों नस्लीय भेदभाव का सामना करना पड़ा।
- पीटरमैरिट्सबर्ग स्टेशन की घटना (7 जून, 1893) -
  - प्रिटोरिया की अपनी यात्रा के दौरान, प्रथम श्रेणी का टिकट होने के बावजूद, गांधी को उनकी नस्ल के कारण तीसरे श्रेणी के डिब्बे में जाने के लिए कहा गया था।
  - मानने से इनकार करने पर, उन्हें पीटरमैरिट्सबर्ग स्टेशन पर ट्रेन से बाहर फेंक दिया गया।
- ट्रेन की घटना ने गांधीजी को एशियाई और अफ्रीकियों के साथ नस्लीय व्यवहार पर स्तब्ध और क्रोधित कर दिया।
- उन्होंने भारतीय कामगारों को उनके अधिकारों के लिए लड़ने में सक्षम बनाने के लिए संगठित करने के लिए दक्षिण अफ्रीका में रहने का फैसला किया।

संघर्ष का मध्यम चरण (1894-1906)

- गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका और ब्रिटेन में अधिकारियों को भारतीयों की दुर्दशा से अवगत कराने के लिए याचिकाएं भेजीं और आशा व्यक्त की कि वे उनकी शिकायतों के निवारण के लिए गंभीर कदम उठाएंगे।
- 1894: गांधीजी ने नेटाल भारतीय कांग्रेस की स्थापना की।
- 1903: भारतीयों के विभिन्न वर्गों को एकजुट करने और उनकी शिकायतों को सुनने के लिए इंडियन ओपिनियन (हिंदी, अंग्रेजी, गुजराती और तमिल में) एक पेपर शुरू किया।
- "सत्याग्रह" शब्द पहली बार अखबार में मुद्रित किया गया था।
- 1904: फ़ोनिक्स आश्रम की स्थापना
- यहीं पर उन्होंने अपनी पहली पुस्तक, इंडिया होम रूल (अंग्रेजी में) प्रकाशित की। इस आश्रम में उनकी कुटिया को सर्वोदय कहा जाता था।

निष्क्रिय प्रतिरोध या सत्याग्रह का चरण (1906-1914)

निष्क्रिय प्रतिरोध या सविनय अवज्ञा का प्रयोग किया, जिसे गांधीजी ने सत्याग्रह कहा।

- पंजीकरण प्रमाण पत्र के खिलाफ सत्याग्रह (1906)
- दक्षिण अफ्रीका में नए कानून ने वहां रहने वाले सभी भारतीयों के लिए हर समय अपनी उंगलियों के निशान वाले पंजीकरण प्रमाण पत्र रखना अनिवार्य कर दिया।
- गांधीजी ने कानून की अवहेलना करने का एक जन अभियान चलाने के लिए निष्क्रिय प्रतिरोध संघ का गठन किया।
- गांधीजी और अन्य जिन्होंने खुद को पंजीकृत करने से इनकार कर दिया, उन्हें अधिकारियों ने जेल में डाल दिया।
- भारतीयों ने सार्वजनिक रूप से अपने पंजीकरण प्रमाणपत्र जला दिए।
- गांधीजी ने अधिकारियों से परेशान होकर अपना बेस जोहान्सबर्ग में स्थानांतरित कर दिया।

> **निष्क्रिय प्रतिरोध:** असहयोग और अन्य अहिंसक तरीकों के इस्तेमाल से सरकार या विशिष्ट सरकारी कानूनों का विरोध। जैसे: आर्थिक बहिष्कार, विरोध मार्च, उपवास आदि।

भारतीय प्रवास पर प्रतिबंध के खिलाफ अभियान (1908)

- भारतीय प्रवास पर प्रतिबंध लगाने वाला नया कानून।
- भारतीयों ने एक प्रांत से दूसरे प्रांत में जाकर और लाइसेंस प्रस्तुत करने से इनकार करके इस कानून की अवहेलना की।

<u>पोल टैक्स (1913) और भारतीय विवाहों के अमान्यकरण के खिलाफ अभियान</u>

- सभी पूर्व अनुबंधित भारतीयों पर तीन पाउंड का पोल टैक्स लगाया गया था।
- चुनाव कर को समाप्त करने की मांग ने अभियान के आधार को बढ़ाया।

- ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार नहीं होने रजिस्ट्रार द्वारा अपंजीकृत सभी विवाहों को रद्द करने के सुप्रीम कोर्ट के आदेश ने भारतीयों और अन्य गैर ईसाई लोगों में आक्रोश उत्पन्न किया ।
- आदेश के अनुसार, हिंदू, मुस्लिम और पारसी विवाहों को अवैध माना जाता था, और ऐसे विवाहों से पैदा हुए बच्चे नाजायज होते थे।
- भारतीयों के लिए, इस फैसले का मतलब उनकी महिलाओं का अपमान था।
- इस घटना के कारण, कई महिलाएं आंदोलन में शामिल हो गईं।

ट्रांसवाल इमिग्रेशन एक्ट का विरोध

- गांधी ने नेटाल से ट्रांसवाल में अवैध रूप से प्रवास करके ट्रांसवाल इमिग्रेशन एक्ट का विरोध किया।

आंदोलन के परिणाम और शिक्षा

- गांधीजी, लॉर्ड हार्डिंग, सी.एफ. एंड्रयूज, और जनरल स्मट्स के बीच एक समझौता हुआ
  - जिसमें दक्षिण अफ्रीका की सरकार ने मतदान कर, पंजीकरण प्रमाण पत्र, और भारतीय रीति-रिवाजों के अनुसार विवाह से संबंधित प्रमुख भारतीय मांगों पर सहमति व्यक्त की
  - और भारतीय आप्रवासन के मुद्दे के प्रति सहानुभूति दिखाने का वादा किया।
- दक्षिण अफ्रीका में सरकार से लड़ने के दौरान, गांधीवादी संघर्ष के तरीकों का 'खाका' विकसित हो गया था, जिसे अब भारत पर लागू करना था।

महात्मा गांधी की सत्याग्रह की तकनीक

- यह सत्य और अहिंसा पर आधारित था।
- इसके मूल सिद्धांतों में शामिल हैं
- तीन बुनियादी सिद्धांत: सत्य, अहिंसा और निर्भयता
- असहयोग और बहिष्कार इसके हथियार ।
- गलत करने वाले के खिलाफ संघर्ष में मिले दुख को स्वीकार करना।
- शत्रु के प्रति भी घृणा का भाव नहीं रखना।
- हमेशा सही रास्ते पर चलें और कभी भी बुराई के आगे झुकें नहीं, चाहे परिणाम कुछ भी हो।
- साधन उतना ही जरूरी है जितना साध्य।

महात्मा गांधी का भारत आगमन

- जनवरी 1915: वे भारत लौट आए।
- अपनी वापसी पर, उन्होंने एक प्रमुख कार्यकर्ता, सिद्धांतवादी और सामुदायिक नेता की प्रतिष्ठा अर्जित की।
- अपने राजनीतिक गुरु, गोपाल कृष्ण गोखले की सलाह पर, उन्होंने जनता की स्थिति की निगरानी के लिए देश का दौरा करने का फैसला किया और कम से कम एक साल तक किसी भी मामले में राजनीतिक रूप से शामिल नहीं होने का निर्णय लिया।
- गांधी होमरूल आंदोलन के पक्ष में नहीं थे क्योंकि ब्रिटेन युद्ध के बीच में था।
- उन्होंने राष्ट्रवादी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए एक अहिंसक सत्याग्रह की वकालत की।
- 1917-1918: चंपारण, अहमदाबाद और खेड़ा में वे तीन संघर्षों में शामिल हुए।

चंपारण सत्याग्रह (1917)

भारत में गांधी जी की पहली सविनय अवज्ञा।

- यूरोपीय बागान मालिकों ने चंपारण (बिहार) के किसानों को अपनी जमीन के 3/20 हिस्से (जिसे तिनकठिया प्रणाली कहा जाता है) पर नील उगाने के लिए मजबूर किया और नील की उस उपज को बागान मालिकों द्वारा निर्धारित एक निश्चित कीमत पर बेचने के लिए मजबूर किया।
- एक स्थानीय व्यक्ति राजकुमार शुक्ल ने गांधी को चंपारण के किसानों की समस्याओं को देखने के लिए आमंत्रित किया।
- गांधीजी राजेंद्र प्रसाद, मजहरुल-हक, महादेव देसाई, नरहरि पारेख और जेबी कृपलानी के साथ मामले की जांच के लिए चंपारण पहुंचे।
- सरकार ने मामले में जाने के लिए एक समिति नियुक्त की और गांधीजी जिसके सदस्य थे।
- गांधी ने अधिकारियों को सुझाव दिया कि तिनकठिया प्रणाली को समाप्त कर दिया जाना चाहिए और किसानों को उनसे वसूले गए अवैध धन के लिए मुआवजा दिया जाना चाहिए (केवल 25% मुआवजा दिया जाना चाहिए)।
- गांधीजी ने भारत में सविनय अवज्ञा की पहली लड़ाई जीती।
- **अन्य नेता:** ब्रजकिशोर प्रसाद, अनुग्रह नारायण सिन्हा, राम नवमी प्रसाद और शंभूशरण वर्मा।

महत्व

- इसने जबरन खेती और खराब उत्पादन के मामले में बागान मालिकों के हाथों किसानों के लंबे उत्पीड़न को समाप्त कर दिया।
- चंपारण कृषि अधिनियम, 1918 किसानों के हितों की रक्षा के लिए बनाया गया था।
- अन्याय का मुकाबला करने के लिए लोगों को सत्याग्रह की शक्ति के प्रति आश्वस्त किया।
- चंपारण में गांधी की जीत ने उन्हें जनता के बीच हीरो बना दिया

अहमदाबाद मिल हड़ताल (1918)

- भारत में गांधीजी की पहली भूख हड़ताल।
- **मार्च 1918:** प्लेग बोनस को बंद करने के मुद्दे पर गांधी ने अहमदाबाद की सूती मिल के मजदूरों का मुद्दा उठाया।
- **मिल मालिक:** बोनस बंद करने के लिए
- **श्रमिक:** प्रथम विश्व युद्ध में ब्रिटेन की भागीदारी के कारण युद्धकालीन मुद्रास्फीति को बनाए रखने के लिए अपने वेतन में 50% की वृद्धि की मांग की।
- **परिणाम:** मिल मालिक 20% वेतन वृद्धि पर सहमत हुए। कर्मचारी हड़ताल पर चले गए।

unleash the topper in you

- कार्यकर्ता मदद के लिए अनुसूया साराभाई के पास पहुंचे।
    - वह एक सामाजिक कार्यकर्ता थीं, जो मिल मालिकों में से एक और अहमदाबाद मिल ओनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष अंबालाल साराभाई की बहन भी थीं।
- अनुसूया बहन ने गांधीजी को इस मामले में हस्तक्षेप करने के लिए कहा क्योंकि मिल मालिकों और श्रमिकों द्वारा उनका समान रूप से सम्मान किया जाता था
- हालांकि गांधीजी मिल मालिक अंबालाल के मित्र थे, लेकिन उन्होंने मजदूरों के मुद्दे को उठाया।
- गांधीजी ने स्थिति का विश्लेषण करने पर श्रमिकों को हड़ताल पर जाने और 50% के बजाय 35% वेतन वृद्धि की मांग करने के लिए कहा।
- गांधीजी ने कार्यकर्ताओं से हड़ताल के दौरान अहिंसा की रणनीति का पालन करने के लिए कहा।
- मजदूरों के संकल्प को मजबूत करने के लिए गांधीजी ने स्वयं आमरण अनशन (उनका पहला) किया।
- हड़ताल के चौथे दिन ट्रिब्यूनल ने कर्मचारियों को 35 प्रतिशत वेतन वृद्धि देने का फैसला सुनाया।

खेड़ा सत्याग्रह (1918)

- भारत में गांधीजी का पहला असहयोग।
- 1918 में सूखे और उसके बाद फसल खराब होने के कारण गुजरात के खेड़ा जिले के किसान राजस्व कर को निलंबित करने की मांग कर रहे थे।
- राजस्व संहिता के अनुसार, यदि उपज सामान्य उत्पादन का एक-चौथाई से कम था, तो किसान छूट के हकदार थे।
- सरकार ने किसानों की मांगठुकरा दी
- सरकार ने मांग की कि कर की पूरी वसूली की जाए अन्यथा किसानों की संपत्ति जब्त कर ली जाएगी।
- गांधीजी ने इस मुद्दे पर किसानों का समर्थन किया और किसानों से करों का भुगतान न करने के लिए कहा।
- असहयोग का नेतृत्व सरदार वल्लभभाई पटेल ने नरहरि पारिख, मोहनलाल पांड्या और रविशंकर व्यास के साथ किया, जिन्होंने गांवों का दौरा किया, ग्रामीणों को संगठित किया और उन्हें राजनीतिक नेतृत्व प्रदान किया।
- अंत में, सरकार किसानों के साथ सहमत हुई और केवल उन किसानों से कर वसूलने के लिए तैयार थी जो भुगतान कर सकते थे।
- सरकार विचाराधीन वर्ष के लिए और अगले वर्ष के लिए कर को निलंबित करने पर सहमत हुई; दर वृद्धि को कम करना; और जब्त की गई सारी संपत्ति वापस कर दी गयी।

इन तीन घटनाओं का महत्व

आंदोलनों ने गांधी की शैली और राजनीति के तरीके का प्रदर्शन किया

आंदोलनों ने गांधीजी को राज्य और जनता के मामलों का अध्ययन करने का मौका दिया और इस तरह उनकी ताकत और कमजोरियों को समझने में मदद की।

मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार और भारत सरकार अधिनियम, 1919

- इसका लक्ष्य यह सुनिश्चित करना था कि सरकार में भारतीयों को प्रतिनिधित्व दिया जाए।
- सरकार के संघीय और प्रांतीय दोनों स्तरों पर सुधार लाया जाए।

विशेषताएं

- प्रांतीय सरकार (कार्यकारी)
- प्रांतों में द्वैध शासन की शुरुआत की।
- राज्यपाल कार्यकारी प्रमुख होगा।
- विषयों को दो सूचियों में विभाजित किया गया था: 'आरक्षित' और 'स्थानांतरित' विषय।
- आरक्षित विषय: राज्यपाल द्वारा उनकी कार्यकारी परिषद के माध्यम से प्रशासित
- स्थानांतरित विषय: विधान परिषद के निर्वाचित सदस्यों में से मनोनीत मंत्रियों द्वारा प्रशासित।
- मंत्रियों को विधायिका के प्रति उत्तरदायी बनाया गया, जबकि कार्यकारी पार्षद विधायिका के प्रति उत्तरदायी नहीं थे।
- प्रांत में संवैधानिक तंत्र की विफलता के मामले में, हस्तांतरित विषयों को राज्यपाल द्वारा प्रशासित किया जाएगा।

विधान - सभा

- प्रांतीय विधान परिषद में 70% सदस्यों का चुनाव होना था।
- महिलाओं को वोट देने का अधिकार ।
- विधान परिषदें राज्यपाल की सहमति से कानून बना सकती थीं।
- राज्यपाल के पास विधेयकों को वीटो करने और अध्यादेश जारी करने की शक्ति थी।
- विधान परिषदों के पास बजट को अस्वीकार करने की शक्ति थी, लेकिन यदि आवश्यक हो तो राज्यपाल इसे बहाल कर सकता था।

केंद्र सरकार- (कार्यकारी)

- मुख्य कार्यकारी प्राधिकरण गवर्नर-जनरल था।
- वायसराय की कार्यकारी परिषद में आठ सदस्य (3 भारतीय) थे।
- प्रांतों में, आरक्षित विषय गवर्नर-जनरल के नियंत्रण में थे।
- गवर्नर-जनरल के पास अनुदानों में कटौती को बहाल करने, केंद्रीय विधायिका द्वारा खारिज किए गए बिलों को प्रमाणित करने और अध्यादेश जारी करने की शक्ति थी।

विधान - सभा

- द्विसदनीय विधायिका का परिचय दिया।
- सदस्य:
    - निचला सदन या केंद्रीय विधान सभा: 145 सदस्य
    - उच्च सदन या राज्य परिषद: 60 सदस्य।
- राज्य परिषद का कार्यकाल 5 वर्ष था और इसमें केवल पुरुष सदस्य थे।

- केन्द्रीय विधान सभा का कार्यकाल 3 वर्ष का था।
- भारत के राज्य सचिव को ब्रिटिश राजकोष से भुगतान किया जाता था।

महत्व

- **भारतीयों में जागृति:** भारतीयों को प्रशासन के बारे में गुप्त सूचना मिली और वे अपने कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो गए। जिससे राष्ट्रवाद की भावना पैदा हुई।
- **मतदान के अधिकारों का विस्तार:** भारत में चुनाव क्षेत्रों का विस्तार हुआ और लोग मतदान के महत्व को समझने लगे।
- **प्रांतों में स्वशासन:** अधिनियम ने भारत में प्रांतीय स्वशासन के अस्तित्व को जन्म दिया।
- इस अधिनियम ने लोगों को प्रशासन करने की शक्ति दी और सरकार से प्रशासनिक दबाव बहुत कम हो गया।
- भारतीयों को प्रांतीय प्रशासन में जिम्मेदारियों का निर्वहन करने के लिए तैयार किया।

कमियां

- मताधिकार बहुत सीमित था।
- वायसराय और केंद्र में उसकी कार्यकारी परिषद पर विधायिका का कोई नियंत्रण नहीं था।
- प्रांतीय मंत्रियों को वित्त और नौकरशाहों पर कोई नियंत्रण नहीं दिया गया था।
- प्रांतों का सापेक्षिक महत्व के कारण केंद्रीय विधायिका से प्रांतों को सीटों का आवंटन किया गया था।
    - जैसे: पंजाब का सैन्य महत्व और बॉम्बे का व्यावसायिक महत्व।
- विषयों का अनुचित विभाजन: केंद्रीय विधायिका को बहुत कम शक्ति दी गई थी और वित्त पर कोई नियंत्रण नहीं था।

कांग्रेस की प्रतिक्रिया

- बॉम्बे सत्र 1918: हसन इमाम की अध्यक्षता में विशेष सत्र, कांग्रेस ने सुधारों को "निराशाजनक" और "असंतोषजनक" करार दिया और इसके बजाय प्रभावी स्वशासन की मांग की।
- तिलक के अनुसार: "अयोग्य और निराशाजनक - एक धूप रहित सुबह"
- एनी बेसेंट ने सुधारों को "इंग्लैंड के प्रस्ताव के योग्य और भारत द्वारा स्वीकार करने के लिए अयोग्य" पाया।
- सुरेंद्रनाथ बनर्जी-सरकारी प्रस्तावों को स्वीकार करने के पक्ष में।

रॉलेट एक्ट (1919)

- भारत सरकार अधिनियम, 1919: पूरे भारत में व्यापक विरोध और रैलियों का नेतृत्व किया।
- 1919: रॉलेट एक्ट को आधिकारिक रूप से अराजक और क्रांतिकारी अपराध अधिनियम कहा गया।
- भारतीय लोगों की 'देशद्रोही साजिश' की जांच के लिए सर सिडनी रॉलेट की अध्यक्षता वाली एक समिति द्वारा इस अधिनियम की सिफारिश की गई थी।
- इंपीरियल लेजिस्लेटिव काउंसिल के सभी निर्वाचित भारतीय सदस्यों ने बिल के खिलाफ मतदान किया और बिल के पारित होने के विरोध में इस्तीफा दे दिया।
- इस अधिनियम ने केवल राजद्रोह के संदेह पर वारंट के बिना भारतीयों की गिरफ्तारी की अनुमति दी।
- इस उद्देश्य के लिए एक विशेष प्रकोष्ठ का गठन किया गया था जिसमें उच्च न्यायालय के तीन न्यायाधीश शामिल थे।
- उस पैनल के ऊपर अपील की कोई अदालत नहीं थी।
- इस अधिनियम के तहत बंदी प्रत्यक्षीकरण के कानून को निलंबित कर दिया गया था।
- भारत में वाक् और सभा की स्वतंत्रता पर फिर से प्रतिबंध लगा दिए गए।
- इस अधिनियम के प्रावधानों के तहत, सरकार ने सैकड़ों राष्ट्रवादियों को सलाखों के पीछे डाल दिया, जबकि कुछ को सीधे मार दिया गया।
- रॉलेट एक्ट के विरुद्ध सत्याग्रह - प्रथम सामूहिक हड़ताल
- गांधी ने रॉलेट एक्ट को "ब्लैक एक्ट" कहा और अखिल भारतीय स्तर पर बड़े पैमाने पर विरोध का आह्वान किया।
- फरवरी 1919: गांधीजी ने सत्याग्रह सभा का आयोजन किया और होमरूल लीग और पैन इस्लामवादियों के युवा सदस्यों को शामिल किया।
- प्रतिरोध के तरीके: उपवास और प्रार्थना के साथ एक राष्ट्रव्यापी हड़ताल (हड़ताल), विशिष्ट कानूनों के खिलाफ सविनय अवज्ञा, और गिरफ्तारी और कारावास।
- 6 अप्रैल, 1919 को सत्याग्रह शुरू करने की तारीख तय की गई थी।
- पंजाब में, युद्धकालीन दमन, जबरन भर्तियों और बीमारी के कहर के कारण स्थिति बहुत तनावपूर्ण थी, जिस कारण सेना को बुलाना पड़ा था।
- सर माइकल ओ डायर उस समय पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे।

जलियांवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919)

- 6 अप्रैल 1919: गांधीजी को गिरफ्तार किया गया।
- 9 अप्रैल 1919: राष्ट्रवादी नेताओं, सैफुद्दीन किचलू और डॉ सत्यपाल को ब्रिटिश अधिकारियों ने गिरफ्तार कर लिया।
- इससे भारतीय प्रदर्शनकारियों में आक्रोश फैल गया और तनाव बढ़ गया।
- ब्रिगेडियर-जनरल रेजिनाल्ड डायर, एक वरिष्ठ ब्रिटिश अधिकारी, जिसे गिरफ्तारी के बाद पंजाब में मार्शल लॉ लागू करने और व्यवस्था बहाल करने की जिम्मेदारी सौंपी गई थी।
- 13 अप्रैल: उन्होंने एक उद्घोषणा जारी की जिसमें लोगों को बिना पास के शहर छोड़ने और तीन से अधिक के समूहों में प्रदर्शन या जुलूस या इकट्ठा होने से मना किया गया था।
- 13 अप्रैल बैसाखी के दिन निषेधाज्ञा की जानकारी नहीं होने पर जलियांवाला बाग में लोग उमड़ पड़े।

- ब्रिगेडियर-जनरल डायर अपने आदमियों के साथ घटनास्थल पर पहुंचे और अपने सैनिकों को एकमात्र निकास बिंदु को अवरुद्ध करने और बिना किसी चेतावनी के निहत्थे भीड़ पर गोलियां चलाने का आदेश दिया।
- पुरुषों, महिलाओं और बच्चों की एक निहत्थी भीड़ पर गोलीबारी की गई, जब वे भागने की कोशिश कर रहे थे।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का अनुमान है कि 1,500 से अधिक लोग घायल हुए, और लगभग 1,000 लोग मारे गए।
- घटना के बाद, पंजाब में मार्शल लॉ की घोषणा की गई, और सार्वजनिक कोड़े और अन्य तरह से अपमानित किया गया।
- विरोध में, रवींद्रनाथ टैगोर ने अपनी नाइटहुड की उपाधि का त्याग कर दिया
- गांधीजी ने बोअर युद्ध के दौरान अपने काम के लिए अंग्रेजों द्वारा दी गई कैसर-ए-हिंद की उपाधि को त्याग दिया।
- 18 अप्रैल, 1919 को गांधीजी ने आंदोलन वापस ले लिया।
- उधम सिंह, जिनका नाम राम मोहम्मद सिंह आज़ाद था, ने बाद में 1940 में लंदन में माइकल ओ'डायर की हत्या कर दी। उधम सिंह को उनके काम के लिए फांसी दी गई।
- 14 अक्टूबर, 1919: विकार जांच समिति/हंटरआयोग का गठन किया गया।
    - समिति के सदस्यों में तीन भारतीय थे, सर चिमनलाल हरिलाल सीतलवाड़, पंडित जगत नारायण और सरदार साहिबजादा सुल्तान।
- समिति की अंतिम रिपोर्ट ने सर्वसम्मति से डायर के कार्यों की निंदा की।
- सरकार द्वारा अपने अधिकारियों की सुरक्षा के लिए पारित किए गए क्षतिपूर्ति अधिनियम के कारण इसने डायर पर कोई दंडात्मक या अनुशासनात्मक कार्रवाई नहीं की।
- क्षतिपूर्ति अधिनियम जिसे "व्हाइट वाशिंग बिल" भी कहा जाता था, मोतीलाल नेहरू और अन्य लोगों ने इसकी कड़ी आलोचना की ।
- हाउस ऑफ लॉर्ड्स में, अधिकांश साथियों ने डायर का समर्थन किया
    - सदन ने उनके समर्थन में एक प्रस्ताव पारित किया। मॉर्निंग पोस्ट ने डायर के लिए 26,000 पाउंड की राशि जुटाई।
- अरुण सिंह के नेतृत्व में स्वर्ण मंदिर के पुजारियों ने डायर को सिख घोषित कर सम्मानित किया।
- इसके परिणामस्वरूप गुरुद्वारा सुधार आंदोलन की शुरुआत हुई।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने मदन मोहन मालवीय के नेतृत्व में अपनी गैर-सरकारी समिति नियुक्त की।
    - इसके सदस्यों में मोतीलाल नेहरू, सी.आर. दास, अब्बास तैयबजी, एम.आर. जयकर और गांधीजी शामिल थे।
    - कांग्रेस ने डायर के कृत्य को अमानवीय बताया।

खिलाफत आंदोलन

जन आंदोलन

- 1919-1922: भारत में ब्रिटिश शासन का विरोध करने के लिए खिलाफत आंदोलन और असहयोग आंदोलन का आयोजन किया गया।
- आंदोलनों ने अहिंसा और असहयोग की कार्रवाई की एक एकीकृत योजना को अपनाया।

कारण

- सरकारी शत्रुता:
    - रॉलेट एक्ट, पंजाब में मार्शल लॉ लागू करना और जलियांवाला बाग हत्याकांड ने विदेशी शासन के क्रूर और असभ्य चेहरे को उजागर किया।
- पंजाब में हो रहे अत्याचारों पर हंटर आयोग की कार्यवाही बेईमानी साबित हुई।
- हाउस ऑफ लॉर्ड्स (ब्रिटिश संसद के) ने जनरल डायर की कार्रवाई का समर्थन किया।
- असंतुष्ट भारतीय: द्वैध शासन की अपनी कुविचारित योजना के साथ मोंटेग्यू-चेम्सफोर्ड सुधार स्वशासन के लिए भारतीयों की बढ़ती मांग को पूरा करने में विफल रहे।
- आर्थिक कठिनाइयाँ: युद्ध के बाद के वर्षों में देश की आर्थिक स्थिति वस्तुओं की कीमतों में वृद्धि,
    - भारतीय उद्योगों के उत्पादन में कमी,
    - करों और किराए के बोझ में वृद्धि आदि से खतरनाक हो गई थी।
- युद्ध के कारण समाज के लगभग सभी वर्गों को आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ा और इससे ब्रिटिश विरोधी रवैया मजबूत हुआ

खिलाफत मुद्दा

- रॉलेट एक्ट के खिलाफ आंदोलन ने समाज के विभिन्न वर्गों विशेषकर हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ ला दिया।
- 1919: तुर्की के ऑटोमन साम्राज्य की रक्षा के लिए शुरू किया गया, जो प्रथम विश्व युद्ध के बाद पतन के कगार पर था।
- युद्ध के बाद, अंग्रेजों ने तुर्की को विभाजित कर दिया और खलीफा को सत्ता से हटा दिया गया।
- दुनिया भर के मुसलमानों ने मांग की कि खलीफा का मुस्लिम पवित्र स्थानों पर नियंत्रण हो, और क्षेत्रीय व्यवस्था के बाद उसे पर्याप्त क्षेत्र मिलने चाहिए।
- **एक खिलाफत समिति का गठन :** 1919 की शुरुआत में अली भाइयों (शौकत अली और मुहम्मद अली), मौलाना आज़ाद, अजमल खान और हसरत मोहानी के नेतृत्व में।

खिलाफत-असहयोग कार्यक्रम का विकास

- 1919: दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय खिलाफत सम्मेलन में ब्रिटिश सामानों के बहिष्कार का आह्वान।
- अखिल भारतीय खिलाफत समिति के अध्यक्ष के रूप में गांधी जी ने इसे अंग्रेजों के खिलाफ हिंदुओं और मुसलमानों को एक साथ लाने के अवसर के रूप में देखा।

- एम.ए.जिन्ना ने खिलाफत आंदोलन का विरोध किया क्योंकि यह धर्म और राजनीति को मिलाएगा, भले ही मुस्लिम लीग आंदोलन के पक्ष में थी।

खिलाफत के मुद्दे पर कांग्रेस का दृष्टिकोण

- कांग्रेस सरकार के खिलाफ सत्याग्रह और असहयोग शुरू करने का विरोध कर रही थी।
- तिलक ने एक धार्मिक मुद्दे पर मुस्लिम नेताओं के साथ गठबंधन का विरोध किया।
- 1920: खिलाफत नेताओं और कांग्रेस के बीच एक गठबंधन बनाया गया था।

असहयोग खिलाफत आंदोलन

- **फरवरी 1920:** खिलाफत के मुद्दे पर वायसराय के पास एक संयुक्त हिंदू-मुस्लिम प्रतिनिधिमंडल भेजा गया।
- गांधीजी ने घोषणा की कि भारतीय मुसलमानों को संतुष्ट करने में शांति संधि के विफल होने पर वे जल्द ही असहयोग आंदोलन का नेतृत्व करेंगे।
- **मई 1920:** सेवरेस की संधि पर हस्ताक्षर किए गए जिसने तुर्की को पूरी तरह से खंडित कर दिया।
- **जून 1920:** इलाहाबाद में एक सर्वदलीय सम्मेलन में गांधीजी को स्कूलों, कॉलेजों और कानून अदालतों के बहिष्कार के कार्यक्रम का नेतृत्व करने के लिए कहा गया।
- **31 अगस्त 1920:** खिलाफत समिति द्वारा औपचारिक रूप से असहयोग आंदोलन शुरू किया गया। (तिलक ने 1 अगस्त 1920 को अंतिम सांस ली।)
- **सितम्बर 1920:** कलकत्ता में कांग्रेस के एक विशेष अधिवेशन में गांधीजी ने अहिंसक, असहयोग आंदोलन शुरू किया। इसे कांग्रेस ने मंजूरी दे दी थी।

कार्यक्रम के निम्नलिखित उद्देश्य थे:

- पंजाब के साथ हुए अन्याय का निवारण (जलियांवाला बाग त्रासदी)
- खिलाफत मुद्दा।
- शांतिपूर्ण और वैध साधनों का उपयोग करके भारत के लिए स्वराज प्राप्त करना।
- असहयोग की विधि में का निम्नलिखित का बहिष्कार शामिल था -
  - सरकार द्वारा संचालित शिक्षण संस्थान।
  - कानून अदालतें। इसके बजाय पंचायतों के माध्यम से न्याय दिया जाना चाहिए।
  - विधान परिषदें
  - विदेशी कपड़ा और खादी का प्रयोग
- अन्य तरीके
  - हाथ से कताई के अभ्यास को बढ़ावा देना।
  - सरकारी सम्मान और उपाधियों का त्याग
  - आंदोलन के अंतिम चरण में करों का भुगतान न करने का अभियान चलाया गया।
  - हिंदू-मुस्लिम एकता को बढ़ावा देना और अस्पृश्यता को दूर करने के लिए काम करना।

- दिसंबर 1920: भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नागपुर अधिवेशन ने निम्नलिखित बातो का समर्थन किया
  - असहयोग का कार्यक्रम
  - जन संघर्ष का उपयोग करके शांतिपूर्ण और वैध माध्यमों से स्वराज की प्राप्ति।
  - कांग्रेस का नेतृत्व करने के लिए 15 सदस्यों की एक कांग्रेस कार्य समिति (सीडब्ल्यूसी) का गठन किया जाएगा
  - भाषाई आधार पर समितियों का गठन किया गया
  - वार्ड समितियों का गठन किया गया, और प्रवेश शुल्क को घटाकर चार आना कर दिया गया।
  - क्रांतिकारी राष्ट्रवादियों के कई समूहों, विशेषकर बंगाल के लोगों ने भी कांग्रेस के कार्यक्रम को समर्थन देने का संकल्प लिया।

आंदोलन का प्रसार

- अली के भाइयों के साथ गांधीजी ने देशव्यापी दौरा किया।
- हजारों छात्रों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों को छोड़ दिया।
- 1920 में अलीगढ़ में जामिया मिलिया इस्लामिया की स्थापना, 1921 में काशी विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ और बिहार विद्यापीठ की स्थापना।
- मोतीलाल नेहरू, जवाहरलाल नेहरू, सी.आर. दास आदि जैसे कई वकीलों ने वकालत छोड़ दीं।
- विदेशी कपड़ों का बहिष्कार किया गया और उन्हें सार्वजनिक रूप से जला दिया गया, और उनका आयात आधा हो गया।
- विदेशी शराब व सामान बेचने वाली दुकानों पर धरना
- आंदोलन को वित्तपोषित करने के लिए तिलक स्वराज कोष की स्थापना की गई थी
  - इसे अत्यधिक अंशदान दिया गया तथा एक करोड़ रुपये इक्कठे हो गये।
- कांग्रेस स्वयंसेवी वाहिनी की स्थापना की गई।
- जुलाई 1921: अली बंधुओं ने मुसलमानों से सेना को अधार्मिक बताते हुए इस्तीफा देने को कहा।
- गांधीजी ने आह्वान का समर्थन किया और इसी तरह का एक प्रस्ताव कांग्रेस समितियों द्वारा पारित किया गया। इसके लिए अली बंधुओं को गिरफ्तार किया गया था।
- अवध किसान आंदोलन (यूपी), एका आंदोलन (यूपी), मोपला विद्रोह (मालाबार) और पंजाब में सिख आंदोलन जैसे देश के विभिन्न हिस्सों में स्थानीय आंदोलन भी शुरू हुए।

आंदोलन पर लोगों की प्रतिक्रिया

- मध्यम वर्ग की आबादी ने आंदोलन के प्रारंभिक चरण में भाग लिया, हालांकि, बाद में वे गांधी के कार्यक्रम के प्रति बहुत सारी आपत्तियों के कारण दूर रहे।
- छोटे व्यवसाय समूहों ने आंदोलन को समर्थन दिया क्योंकि आर्थिक बहिष्कार के कारण आयात में कमी आई थी, और स्वदेशी के उपयोग से उनको लाभ हुआ।
- बड़े व्यापारिक समूह अपने कारखानों में श्रमिक अशांति के डर से आंदोलन के प्रति संशय में रहे।

- बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया। आंदोलन ने किसानों को अंग्रेजों के साथ-साथ अपने भारतीय आकाओं और उत्पीड़कों (जमींदारों और व्यापारियों) के खिलाफ अपनी भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति दी।
- छात्र आंदोलन के सक्रिय स्वयंसेवक बन गए, और उनमें से हजारों ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों का बहिष्कार किया और राष्ट्रीय स्कूलों और कॉलेजों में शामिल हो गए।
- महिलाएं बड़ी संख्या में बाहर आईं और तिलक कोष के लिए अपने गहने भी दान दिए। उन्होंने विदेशी कपड़े और शराब बेचने वाली दुकानों पर धरने में सक्रिय भाग लिया।
- मोपला विद्रोह जैसी घटनाओं के बावजूद मुसलमानों ने भारी संख्या में भाग लिया और आंदोलन में सांप्रदायिक एकता दिखाई।

सरकार की प्रतिक्रिया

- पुलिस फायरिंग में कई लोगों की जान चली गई।
- कांग्रेस और खिलाफत स्वयंसेवी संगठनों को गैरकानूनी और अवैध घोषित किया गया।
- सार्वजनिक सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया
- मई 1921 में गांधी और वायसराय लॉर्ड रीडिंग के बीच बातचीत बंद हो गयी
- सरकार ने प्रदर्शनकारियों पर कठोर दमनात्मक उपाय किए।
- स्वयंसेवी कोर्प्स को अवैध घोषित कर दिया गया, प्रेस को नियंत्रित किया गया और गांधीजी को छोड़कर अधिकांश राष्ट्रवादी नेताओं को जेल में डाल दिया गया।

आंदोलन का अंतिम चरण

- सी.आर. दास की अध्यक्षता में1921 में अहमदाबाद अधिवेशन: जेल में रहते हुए भी गांधीजी को इस मुद्दे पर एकमात्र अधिकार प्रदान किया गया।
- 1 फरवरी, 1922: गांधी ने घोषणा की की अगर सभी राजनीतिक कैदियों को सात दिनों के भीतर जेल से रिहा नहीं किया गया और प्रेस नियंत्रण नहीं हटाया गया तो बारदोली (गुजरात) से बड़े पैमाने पर सविनय अवज्ञा शुरू किया जाएगा।

<u>चौरी चौरा की घटना</u>

- 5 फरवरी, 1922: उत्तर प्रदेश के गोरखपुर में चौरी चौरा में शराब की बिक्री और उच्च खाद्य कीमतों के खिलाफ अभियान चलाने वाले स्वयंसेवकों के एक समूह के नेता को पुलिस ने पीटा और फिर 3000 किसानों के कांग्रेस के जुलूस पर गोलियां चला दीं।
- इसका बदला लेने के लिए आक्रोशित भीड़ ने पुलिसकर्मियों सहित थाने में आग लगा दी, जिसमें 22 पुलिसकर्मियों की मौत हो गई।
- आंदोलन की हिंसक प्रवृत्ति को देखते हुए गांधी ने तुरंत असहयोग आंदोलन को वापस लेने की घोषणा की।
- फरवरी 1922: कांग्रेस कार्यसमिति ने बारदोली (गुजरात) में बैठक की और रचनात्मक कार्यक्रम शुरू करने के लिए एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें शामिल था-
    - खादी को लोकप्रिय बनाना - आर्थिक आत्मनिर्भरता।
    - राष्ट्रीय विद्यालयों की स्थापना,
    - हिंदू-मुस्लिम एकता के लिए और अस्पृश्यता के खिलाफ अभियान।
    - महिलाओं का सशक्तिकरण
    - अन्य ग्रामोद्योगों को बढ़ावा देना
- सी.आर. दास, मोतीलाल नेहरू, सुभाष बोस, जवाहरलाल नेहरू ने आंदोलन के निलंबन का विरोध किया।
- मार्च 1922 में, गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और छह साल जेल की सजा सुनाई गई।

<u>गांधीजी ने असहयोग आंदोलन क्यों वापस ले लिया?</u>

- गांधीजी ने आंदोलन को उसके अहिंसक स्वरूप के कारण स्थगित कर दिया क्योंकि उनका मानना था कि इस तरह की हिंसा को औपनिवेशिक शासन द्वारा आसानी से दबाया जा सकता है।
- आंदोलन को रोकने की जरूरत थी क्योंकि अत्यधिक लम्बा आन्दोलन जनता के लिए थका देने वाला हो सकता है।
- आंदोलन का केंद्रीय विषय: खिलाफत प्रश्न अधिक प्रासंगिक नहीं रहा क्योंकि नवंबर 1922 में तुर्की के लोग मुस्तफा कमाल पाशा के अधीन उठ खड़े हुए और सुल्तान को राजनीतिक सत्ता से वंचित कर दिया। तथा तुर्की को एक धर्मनिरपेक्ष राज्य बना दिया गया था।

<u>खिलाफत असहयोग आंदोलन का मूल्यांकन</u>

- शहरी मुसलमानों को आंदोलन के दायरे में लाया गया, लेकिन अंत में इसने सांप्रदायिक रूप ले लिया।
- नेताओं ने बड़े पैमाने पर देश का दौरा किया और आबादी के हर तबके का राजनीतिकरण किया- कारीगर, किसान, छात्र, शहरी गरीब, महिलाएं, व्यापारी आदि।
- उदारवादी राष्ट्रवादियों द्वारा की गयी आर्थिक आलोचना ने औपनिवेशिक शासन के मिथक का भंडाफोड़ कर दिया।
- जनता में अब औपनिवेशिक शासन और उसके शक्तिशाली दमन का भय ख़त्म हो गया था।